समास
(Compound)

06

➢ समास शब्द दो शब्दों 'सम्' (संक्षिप्त) एवं 'आस' (कथन/शब्द) के मेल से बना है जिसका अर्थ है—संक्षिप्त कथन या शब्द । समास प्रक्रिया में शब्दों का संक्षिप्तीकरण किया जाता है।

➢ समास : दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिल कर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

➢ समस्त-पद / सामासिक पद : समास के नियमों से बना शब्द समस्त-पद या सामासिक शब्द कहलाता है।

➢ समास-विग्रह : समस्त पद के सभी पदों को अलग-अलग किए जाने की प्रक्रिया समास-विग्रह या व्यास कहलाती है; जैसे— 'नील कमल' का विग्रह 'नीला है जो कमल' तथा 'चौराहा' का विग्रह है— चार राहों का समूह ।

➢ समास रचना में प्रायः दो पद होते हैं। पहले को पूर्वपद और दूसरे को उत्तरपद कहते हैं; जैसे—'राजपुत्र' में पूर्वपद 'राज' है और उत्तरपद 'पुत्र' है। समास प्रक्रिया में पदों के बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, जैसे—राजा का पुत्र = राजपुत्र। यहाँ 'का' विभक्ति लुप्त हो गई है। इसके अलावा कई शब्दों में कुछ विकार भी आ जाता है; जैसे—काठ की पुतली = कठपुतली (काठ के 'का' का 'क' बन जाना); घोड़े का सवार = घुड़सवार (घोड़े के 'घो' का 'घु' बन जाना)।

समास के भेद

समास के छह मुख्य भेद हैं—

1. अव्ययीभाव समास *(Adverbial Compound)*
2. तत्पुरुष समास *(Determinative Compound)*
3. कर्मधारय समास *(Appositional Compound)*
4. द्विगु समास *(Numeral Compound)*
5. द्वंद्व समास *(Copulative Compound)*
6. बहुव्रीहि समास *(Attributive Compound)*

पदों की प्रधानता के आधार पर वर्गीकरण—

पूर्वपद प्रधान — अव्ययीभाव
उत्तरपद प्रधान — तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु
दोनों पद प्रधान — द्वंद्व
दोनों पद अप्रधान — बहुव्रीहि *(इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)*

1. अव्ययीभाव समास : जिस समास का पहला पद *(पूर्वपद)* अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—

पहचान : पहला पद अनु, आ, प्रति, भर, यथा, यावत, हर आदि होता है ।

पूर्वपद–अव्यय	+	उत्तरपद	=	समस्त-पद	विग्रह
प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आ	+	जन्म	=	आजन्म	जन्म से लेकर
यथा	+	संभव	=	यथासंभव	जैसा संभव हो
अनु	+	रूप	=	अनुरूप	रूप के योग्य
भर	+	पेट	=	भरपेट	पेट भर के
प्रति	+	कूल	=	प्रतिकूल	इच्छा के विरुद्ध
हाथ	+	हाथ	=	हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में

2. तत्पुरुष समास : जिस समास में बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—

राजा का कुमार = राजकुमार,
धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ,
रचना को करने वाला = रचनाकार

तत्पुरुष समास के भेद : विभक्तियों के नामों के अनुसार छह भेद हैं—

(i) कर्म तत्पुरुष *(द्वितीया तत्पुरुष)* : इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
गगन को चूमने वाला	गगनचुंबी
यश को प्राप्त	यशप्राप्त
चिड़ियों को मारने वाला	चिड़ीमार
ग्राम को गया हुआ	ग्रामगत
रथ को चलाने वाला	रथचालक
जेब को कतरने वाला	जेबकतरा

(ii) करण तत्पुरुष *(तृतीया तत्पुरुष)* : इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
करुणा से पूर्ण	करुणापूर्ण
भय से आकुल	भयाकुल
रेखा से अंकित	रेखांकित
शोक से ग्रस्त	शोकग्रस्त
मद से अंधा	मदांध
मन से चाहा	मनचाहा
पद से दलित	पददलित
सूर द्वारा रचित	सूररचित

(iii) संप्रदान तत्पुरुष *(चतुर्थी तत्पुरुष)* : इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
प्रयोग के लिए शाला	प्रयोगशाला
स्नान के लिए घर	स्नानघर
यज्ञ के लिए शाला	यज्ञशाला
गौ के लिए शाला	गौशाला
देश के लिए भक्ति	देशभक्ति
डाक के लिए गाड़ी	डाकगाड़ी
परीक्षा के लिए भवन	परीक्षा भवन
हाथ के लिए कड़ी	हथकड़ी

(iv) अपादान तत्पुरुष *(पंचमी तत्पुरुष)* : इसमें अपादान कारक की विभक्ति 'से' *(अलग होने का भाव)* लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
धन से हीन	धनहीन	ऋण से मुक्त	ऋणमुक्त
पथ से भ्रष्ट	पथभ्रष्ट	गुण से हीन	गुणहीन
पद से च्युत	पदच्युत	पाप से मुक्त	पापमुक्त
देश से निकाला	देशनिकाला	जल से हीन	जलहीन

(v) संबंध तत्पुरुष *(षष्ठी तत्पुरुष)* : इसमें संबंधकारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
राजा का पुत्र	राजपुत्र	देश की रक्षा	देशरक्षा
राजा की आज्ञा	राजाज्ञा	शिव का आलय	शिवालय
पर के अधीन	पराधीन	गृह का स्वामी	गृहस्वामी
राजा का कुमार	राजकुमार	विद्या का सागर	विद्यासागर

(vi) अधिकरण तत्पुरुष *(सप्तमी तत्पुरुष)* : इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
शोक में मग्न	शोकमग्न	लोक में प्रिय	लोकप्रिय
पुरुषों में उत्तम	पुरुषोत्तम	धर्म में वीर	धर्मवीर
आप पर बीती	आपबीती	कला में श्रेष्ठ	कलाश्रेष्ठ
गृह में प्रवेश	गृहप्रवेश	आनंद में मग्न	आनंदमग्न

नोट : *तत्पुरुष समास के उपर्युक्त भेदों के अलावे कुछ अन्य भेद भी हैं, जिनमें प्रमुख है नञ् समास।*

नञ् समास : जिस समास के पूर्व पद में निषेधसूचक/नकारात्मक शब्द *(अ, अन्, न, ना, गैर आदि)* लगे हों; जैसे— अधर्म *(न धर्म)*, अनिष्ट *(न इष्ट)*, अनावश्यक *(न आवश्यक)*, नापसंद *(न पसंद)*, गैरवाजिब *(न वाजिब)* आदि ।

3. कर्मधारय समास : जिस समस्त-पद का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्य संबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है; जैसे—

पहचान : विग्रह करने पर दोनों पद के मध्य में 'है जो', 'के समान' आदि आते हैं।

विग्रह	समस्त-पद
कमल के समान चरण	चरणकमल
कनक की-सी लता	कनकलता
कमल के समान नयन	कमलनयन
प्राणों के समान प्रिय	प्राणप्रिय
चंद्र के समान मुख	चंद्रमुख
मृग के समान नयन	मृगनयन
देह रूपी लता	देहलता
क्रोध रूपी अग्नि	क्रोधाग्नि
लाल है जो मणि	लालमणि
नीला है जो कंठ	नीलकंठ
महान है जो पुरुष	महापुरुष
महान है जो देव	महादेव
आधा है जो मरा	अधमरा
परम है जो आनंद	परमानंद

4. द्विगु समास : जिस समस्त-पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है। इसमें समूह या समाहार का ज्ञान होता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
सात सिंधुओं का समूह	सप्तसिंधु
दो पहरों का समूह	दोपहर
तीनों लोकों का समाहार	त्रिलोक
चार राहों का समूह	चौराहा
नौ रात्रियों का समूह	नवरात्र
सात ऋषियों का समूह	सप्तऋषि/सप्तर्षि
पाँच मढ़ियों का समूह	पंचमढ़ी
सात दिनों का समूह	सप्ताह
तीनों कोणों का समाहार	त्रिकोण
तीन रंगों का समूह	तिरंगा

5. द्वंद्व समास : जिस समस्त-पद के दोनों पद प्रधान तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगते वह द्वंद्व समास कहलाता है; जैसे—

पहचान : दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिह्न *(Hyphen)* (-) का प्रयोग

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
नदी और नाले	नदी-नाले	राजा और प्रजा	राजा-प्रजा
पाप और पुण्य	पाप-पुण्य	नर और नारी	नर-नारी
सुख और दुःख	सुख-दुःख	खरा या खोटा	खरा-खोटा
गुण और दोष	गुण-दोष	राधा और कृष्ण	राधा-कृष्ण
देश और विदेश	देश-विदेश	ठंडा या गरम	ठंडा-गरम
ऊँच या नीच	ऊँच-नीच	छल और कपट	छल-कपट
आगे और पीछे	आगे-पीछे	अपना और पराया	अपना-पराया

6. बहुव्रीहि समास : जिस समस्त-पद में कोई पद प्र नहीं होता, दोनों पद मिल कर किसी तीसरे पद की ओर सं करते हैं, उसमें बहुव्रीहि समास होता है, जैसे—'नीलकंठ', नी है कंठ जिसका अर्थात् शिव। यहाँ पर दोनों पदों ने मिल एक तीसरे पद 'शिव' का संकेत किया, इसलिए यह बहुव्र समास है :

समस्त-पद	विग्रह
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका *(गणेश)*
दशानन	दस हैं आनन जिसके *(रावण)*
चक्रपाणि	चक्र है पाणि में जिसके *(विष्णु)*
महावीर	महान वीर है जो *(हनुमान)*
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी *(विष्णु)*
प्रधानमंत्री	मंत्रियों में प्रधान है जो *(प्रधानमंत्री)*
पंकज	पंक में पैदा हो जो *(कमल)*
अनहोनी	न होने वाली घटना *(कोई विशेष घटना)*
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला है जो *(कृष्ण)*
पीतांबर	पीत है अंबर जिसका *(कृष्ण)*
निशाचर	निशा में विचरण करने वाला *(राक्षस)*
चौलड़ी	चार हैं लड़ियाँ जिसमें *(माला)*
त्रिलोचन	तीन हैं लोचन जिसके *(शिव)*
चंद्रमौलि	चंद्र है मौलि पर जिसके *(शिव)*
विषधर	विष को धारण करने वाला *(सर्प)*
मृगेंद्र	मृगों का इंद्र *(सिंह)*
घनश्याम	घन के समान श्याम है जो *(कृष्ण)*
मृत्युंजय	मृत्यु को जीतने वाला (शंकर)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास मे अंतर

इन दोनों समासों में अंतर समझने के लिए इनके वि पर ध्यान देना चाहिए। कर्मधारय समास में एक पद विशे या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता जैसे— 'नीलगगन' में 'नील' विशेषण है तथा 'गगन' वि है। इसी तरह 'चरणकमल' में 'चरण' उपमेय है और 'क उपमान है। अतः ये दोनों उदाहरण कर्मधारय समास के है

बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही किसी संज्ञा के विश का कार्य करता है; जैसे—'चक्रधर' चक्र को धारण करता है अर्थात् 'श्रीकृष्ण'।

नीलकंठ — नीला है जो कंठ—कर्मधारय समास।

नीलकंठ — नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव—बहु समास।

लंबोदर — मोटे पेट वाला—कर्मधारय समास।

लंबोदर — लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश—बहु समास।

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुव्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है; जैसे—

चतुर्भुज—चार भुजाओं का समूह—द्विगु समास।
चतुर्भुज—चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु—बहुव्रीहि समास।
पंचवटी—पाँच वटों का समाहार—द्विगु समास।
पंचवटी—पाँच वटों से घिरा एक निश्चित स्थल अर्थात् दंडकारण्य में स्थित वह स्थान जहाँ वनवासी राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ निवास किया—बहुव्रीहि समास।
दशानन—दस आननों का समूह—द्विगु समास।
दशानन—दस आनन हैं जिसके अर्थात् रावण—बहुव्रीहि समास।

द्विगु और कर्मधारय में अंतर

(i) द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।

(ii) द्विगु का पहला पद ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है; जैसे—

नवरत्न — नौ रत्नों का समूह — द्विगु समास
चतुर्वर्ण — चार वर्णों का समूह — द्विगु समास
पुरुषोत्तम — पुरुषों में जो है उत्तम — कर्मधारय समास
रक्तोत्पल — रक्त है जो उत्पल — कर्मधारय समास

संधि और समास में अंतर

अर्थ की दृष्टि से यद्यपि दोनों शब्द समान हैं अर्थात् दोनों का अर्थ 'मेल' ही है तथापि दोनों में कुछ भिन्नताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं—

(i) संधि वर्णों का मेल है और समास शब्दों का मेल है।
(ii) संधि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन भी होता है जबकि समास में ऐसा नहीं होता ।
(iii) समास में बहुत से पदों के बीच के कारक-चिह्नों का अथवा समुच्चयबोधकों का लोप हो जाता है; जैसे—

विद्या + आलय = विद्यालय — संधि
राजा का पुत्र = राजपुत्र — समास

(iv) संधि के तोड़ने को 'संधि-विच्छेद' कहते हैं, जबकि समास के पदों को अलग करने को 'समास-विग्रह'।

समास-निर्णय की समस्या

➢ जब परीक्षक 'शब्द' देते हैं और उसमें समास को चिह्नित करने के लिए परीक्षार्थी से कहते हैं, तब परीक्षार्थी के लिए समास-निर्णय की समस्या उठ खड़ी होती है। कारण यह कि समास-विशेष का निर्णय विग्रह से होता है। परिणामतः परीक्षार्थी शब्द का कोई भी विग्रह करने के लिए स्वतंत्र होता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है—विद्याधन। विद्याधन का छः तरह से विग्रह किया जा सकता है—विद्या से (के द्वारा) अर्जित धन (तृतीया तत्पुरुष), विद्या के लिए धन (चतुर्थी तत्पुरुष), विद्या का धन (षष्ठी तत्पुरुष), विद्यारूपी धन (कर्मधारय), विद्या और धन (द्वन्द्व), विद्या है धन जिसका वह, सरस्वती (बहुव्रीहि)।

➢ यदि परीक्षक प्रश्न में स्वतंत्र 'शब्द' की जगह वाक्य में प्रयुक्त शब्द यानी 'पद' में समास बताने को कहे तो यह समस्या नहीं उठेगी, क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त होने पर 'शब्द' सीमित होकर 'पद' बन जायेगा और पद का एक ही विग्रह होगा यानी द्विविधा की स्थिति नहीं रहेगी; जैसे—वसंत पंचमी के दिन विद्याधन की पूजा की जाती है (विद्या है धन जिसका, अर्थात् सरस्वती—बहुव्रीहि समास)।

(i) विद्याधर शर्मा की समृद्धि का राज विद्याधन ही है (विद्या से अर्जित धन—तत्पुरुष)। विद्याधन (विद्यारूपी धन—कर्मधारय समास) की चाह रखने वाले को विद्याधन (विद्या है धन जिसका, अर्थात सरस्वती—बहुव्रीहि समास) की पूजा करनी चाहिए।
(ii) मैंने एक पीताम्बर खरीदा (पीला वस्त्र-कर्मधारय समास)। मैंने पीताम्बर की पूजा की (पीत है अम्बर जिसका, अर्थात् विष्णु—बहुव्रीहि समास)।

समास-विग्रह

सामासिक पद	विग्रह	समास
अगोचर	न गोचर	नञ्
अचल	न चल	नञ्
अजन्मा	न जन्मा	नञ्
अठन्नी	आठ आनों का समाहार	द्विगु
अधर्म	न धर्म	नञ्
अनन्त	न अन्त	नञ्
अनेक	न एक	नञ्
अनपढ़	न पढ़	नञ्
अनभिज्ञ	न अभिज्ञ	नञ्
अन्याय	न न्याय	नञ्
अनुचित	न उचित	नञ्
अपवित्र	न पवित्र	नञ्
अलौकिक	न लौकिक	नञ्
अनुकूल	कुल के अनुसार	अव्ययीभाव
अनुरूप	रूप के ऐसा	अव्ययीभाव
आसमुद्र	समुद्रपर्यन्त	अव्ययीभाव
आजन्म	जन्म से लेकर	अव्ययीभाव
आशालता	आशा रूपी लता	कर्मधारय
आपबीती	आप पर बीती	सप्तमी तत्पुरुष
आकाशवाणी	आकाश से वाणी	पंचमी तत्पुरुष
आनन्दाश्रम	आनन्द का आश्रम	षष्ठी तत्पुरुष
उपकूल	कूल के निकट	अव्ययीभाव
कठफोड़वा	काठ को फोड़नेवाला	द्वितीया तत्पुरुष
कपीश	कपियों में है ईश जो—हनुमान	बहुव्रीहि
कर्महीन	कर्म से हीन	पंचमी तत्पुरुष
कर्मनिरत	कर्म में निरत	सप्तमी तत्पुरुष
कविश्रेष्ठ	कवियों में श्रेष्ठ	सप्तमी तत्पुरुष
कापुरुष	कायर पुरुष	कर्मधारय
कुम्भकार	कुम्भ को करने *(बनाने)* वाला	उपपद तत्पुरुष
काव्यकार	काव्य की रचना करनेवाला	उपपद तत्पुरुष
कृषिप्रधान	कृषि में प्रधान	सप्तमी तत्पुरुष
कुसुमकोमल	कुसुम के समान कोमल	कर्मधारय
कपोतग्रीवा	कपोत के समान ग्रीवा	कर्मधारय
कपड़ा-लत्ता	कपड़ा और लत्ता	द्वन्द्व
कृष्णार्पण	कृष्ण के लिए अर्पण	चतुर्थी तत्पुरुष
क्षत्रियाधम	क्षत्रियों में अधम	स. तत्पुरुष
खगेश	खगों का ईश है जो वह, गरुड़	बहुव्रीहि
गंगाजल	गंगा का जल	ष० तत्पुरुष
गगनांगन	गगन रूपी आंगन	कर्मधारय

सामासिक पद	विग्रह	समास
गगनचुम्बी	गगन को चूमनेवाला	द्वि० तत्पुरुष
गाड़ी घोड़ा	गाड़ी और घोड़ा	द्वन्द्व
ग्रामोद्धार	ग्राम का उद्धार	ष० तत्पुरुष
गिरकट	गिरह को काटनेवाला	द्वि० तत्पुरुष
गिरिधर	गिरि को धारण करे जो वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
गुरुसेवा	गुरु की सेवा	ष० तत्पुरुष
गोपाल	गो का पालन जो करे वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
गौरीशंकर	गौरी और शंकर	द्वन्द्व
गृहस्थ	गृह में स्थित	उपपद तत्पुरुष
गृहागत	गृह को आगत	कर्म तत्पुरुष
घनश्याम	घन के समान श्याम, घन-सा श्याम है जो वह—श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
घर-द्वार	घर और द्वार	द्वन्द्व
चक्रधर	चक्र को जो धारण करता है वह—विष्णु	बहुव्रीहि
चक्रपाणि	चक्र हो पाणि *(हाथ)* में जिसके वह, विष्णु	बहुव्रीहि
चतुरानन	चार हैं आनन जिनको वह, ब्रह्मा	बहुव्रीहि
चन्द्रभाल	भाल पर चन्द्रमा जिसके है वह, शिव	बहुव्रीहि
चवन्नी	चार आने का समाहार	द्विगु
चन्द्रोदय	चन्द्र का उदय	ष० तत्पुरुष
चन्द्रवदन	चन्द्रमा के समान वदन	कर्मधारय
चरणकमल	कमल के समान चरण	कर्मधारय
चिड़ीमार	चिड़िया को मारनेवाला	द्वितीया तत्पुरुष
चौपाया	चार पांव वाला	द्विगु
चौराहा	चार राहों का मिलन-स्थान	द्विगु
जलज	जल में उत्पन्न होता है वह, कमल	बहुव्रीहि
जलद	जल देता है जो वह, बादल	बहुव्रीहि
जन्मान्ध	जन्म से अन्धा	तृतीया तत्पुरुष
जीवनमुक्त	जीवन से मुक्त	पं० तत्पुरुष
जेबघड़ी	जेब के लिए घड़ी	चतुर्थी तत्पुरुष
ठकुरसुहाती	ठाकुर *(मालिक)* के लिए रुचिकर बातें	च० तत्पुरुष
तिलपापड़ी	तिल से बनी पापड़ी	कर्मधारय
तिलचट्टा	तिल को चाटनेवाला	द्वि० तत्पुरुष
दयासागर	दया का सागर	ष० तत्पुरुष
दहीबड़ा	दही में भिगोया बड़ा	मध्यमपदलोपी कर्मधारय
दानवीर	दान में वीर	स० तत्पुरुष
दिनानुदिन	दिन प्रतिदिन	अव्ययीभाव
दुखसंतप्त	दुःख से संतप्त	तृतीया तत्पुरुष
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	च० तत्पुरुष
देशनिकाला	देश से निकाला	पं० तत्पुरुष
देश-विदेश	देश और विदेश	द्वन्द्व
देवासुर	देव और असुर	द्वन्द्व
देशगत	देश को गया हुआ	द्वि० तत्पुरुष
धनहीन	धन से हीन	पं० तत्पुरुष

सामासिक पद	विग्रह	समास
धर्माधर्म	धर्म और अधर्म	द्वन्द्व
धर्मविमुख	धर्म से विमुख	पं० तत्पुरुष
नरोत्तम	नरों में उत्तम	स० तत्पुरुष
नवयुवक	नव युवक	कर्मधारय
नीलोत्पल	नील उत्पल	कर्मधारय
नीलाम्बर	नीला अम्बर या नीला है अम्बर जिसका वह, बलराम	बहुव्रीहि
नेत्रहीन	नेत्र से हीन	पं० तत्पुरुष
पकौड़ी	पकी हुई बड़ी	मध्यमपदलोपी कर्मधारय
पददलित	पद से दलित	तृ० तत्पुरुष
पदच्युत	पद से च्युत	पं० तत्पुरुष
प्रत्येक	प्रति एक	अव्ययीभाव
प्रतिदिन	दिन-दिन	अव्ययीभाव
परमेश्वर	परम ईश्वर	कर्मधारय
पल-पल	हर पल	अव्ययीभाव
परीक्षोपयोगी	परीक्षा के लिए उपयोगी	च० तत्पुरुष
पाकिटमार	पाकिट को मारने *(काटने)* वाला	द्वि० तत्पुरुष
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य	द्वन्द्व
पादप	पैर से पीनेवाला	उपपद तत्पुरुष
पीताम्बर	पीला है अम्बर जिसका वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
पुत्रशोक	पुत्र के लिए शोक	च० तत्पुरुष
पुस्तकालय	पुस्तक का आलय *(घर)*	ष० तत्पुरुष
बार-बार	हर बार	अव्ययीभाव
मनमौजी	मन से मौजी	तृतीया तत्पुरुष
मनगढ़न्त	मन से गढ़ा हुआ	तृ० तत्पुरुष
महाशय	महान् आशय	कर्मधारय
मदमाता	मद से माता	तृ० तत्पुरुष
महारानी	महती रानी	कर्मधारय
मालगोदाम	माल के लिए गोदाम	च० तत्पुरुष
मुरलीधर	मुरली को धरे रहे *(पकड़े रहे)* वह, श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि
मृगनयन	मृग के समान नयन	कर्मधारय
यथाक्रम	क्रम के अनुसार	अव्ययीभाव
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव
यथेष्ट	यथा इष्ट	अव्ययीभाव
रसोईघर	रसोई के लिए घर	च० तत्पुरुष
राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण	द्वन्द्व
रामायण	राम का अयन	ष० तत्पुरुष
राजकन्या	राजा की कन्या	ष० तत्पुरुष
लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका वह, गणेश	बहुव्रीहि
लौहपुरुष	लौह सदृश पुरुष	कर्मधारय
वज्रायुध	वज्र है आयुध जिसका वह, इन्द्र	बहुव्रीहि
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी	ष० तत्पुरुष
वीणापाणि	वीणा है पाणि *(हाथ)* में जिसके वह, सरस्वती	बहुव्रीहि

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को क्या कहते हैं ?
   (a) संधि (b) समास (c) अव्यय (d) छंद
2. समास का शाब्दिक अर्थ होता है—
   (a) संक्षेप (b) विस्तार (c) विग्रह (d) विच्छेद
3. निम्नांकित में कौन-सा पद अव्ययीभाव समास है ?
   (a) गृहागत (b) आचारकुशल
   (c) प्रतिदिन (d) कुमारी *(रेलवे, 1997)*
4. जिस समास में उत्तर-पद प्रधान होने के साथ ही साथ पू तथा उत्तर-पद में विशेषण-विशेष्य का संबंध भी होता है, कौन-सा समास कहते हैं ?
   (a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व *(रेलवे,*
5. निम्नलिखित में से कर्मधारय समास किसमें है ?
   (a) चक्रपाणि (b) चतुर्युगम्
   (c) नीलोत्पलम् (d) माता-पिता *(रेलवे,*

6. जिस समास के दोनों पद अप्रधान होते हैं, वहाँ पर कौन-सा समास होता है ?
(a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
(रेलवे, 1997)

7. 'जितेन्द्रिय' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(रेलवे, 1997)

8. 'देवासुर' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) द्वन्द्व
(रेलवे, 1997)

9. 'देशांतर' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(रेलवे, 1997)

10. 'दीनानाथ' में कौस-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि (c) द्विगु (d) द्वन्द्व
(रेलवे, 1998)

11. 'मुख-दर्शन' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) बहुव्रीहि
(रेलवे, 1998)

12. कौन-सा शब्द बहुव्रीहि समास का सही उदाहरण है ?
(a) निशिदिन (b) त्रिभुवन (c) पंचानन (d) पुरुषसिंह
(रेलवे, 1999)

13. 'निशाचर' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव(b) कर्मधारय (c) नञ् (d) बहुव्रीहि
(बी०एड०, 2000)

14. 'चौराहा' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष
(c) अव्ययीभाव (d) द्विगु *(बी०एड०, 2000)*

15. 'दशमुख' में कौन-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) द्विगु
(बी०एड०, 2000)

16. 'सुपुरुष' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व
(स्टेनोग्राफर परीक्षा, 2001)

17. विशेषण और विशेष्य के योग से कौन-सा समास बनता है ?
(a) द्विगु (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

18. निम्नलिखित में से एक शब्द में द्विगु समास है, उस शब्द का चयन कीजिए—
(a) आजीवन (b) भूदान (c) सप्ताह (d) पुरुषसिंह
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

19. किस समास के दोनों शब्दों के समानाधिकरण होने पर कर्मधारय समास होता है ?
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व (c) द्विगु (d) बहुव्रीहि
(रेलवे, 2001)

20. किसमें सही सामासिक पद है ?
(a) पुरुषधन्वी (b) दिवारात्रि
(c) त्रिलोकी (d) मंत्रिपरिषद *(रेलवे, 2002)*

21. द्विगु समास का उदाहरण कौन-सा है ?
(a) अन्वय (b) दिन-रात
(c) चतुरानन (d) त्रिभुवन *(बैंक परीक्षा, 2002)*

22. इनमें से द्वन्द्व समास का उदाहरण है—
(a) पीताम्बर (b) नेत्रहीन
(c) चौराहा (d) रुपया-पैसा *(रेलवे, 2002)*

23. अव्ययीभाव समास का एक उदाहरण 'यथाशक्ति' का सही विग्रह क्या होगा ?
(a) जैसी-शक्ति (b) जितनी शक्ति
(c) शक्ति के अनुसार (d) यथा जो शक्ति
(बैंक परीक्षा, 2002)

24. 'पाप-पुण्य' में कौन-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) द्वन्द्व
(c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि *(बैंक परीक्षा, 2002)*

25. 'लम्बोदर' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) द्विगु (c) तत्पुरुष (d) बहुव्रीहि
(बैंक परीक्षा, 2002)

26. 'देशप्रेम' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) द्विगु (d) बहुव्रीहि *(बैंक परीक्षा, 2002)*

27. 'परमेश्वर' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) कर्मधारय (c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

28. 'अनायास' में कौन-सा समास है ?
(a) नञ् (b) द्वन्द्व (c) द्विगु (d) अव्ययीभाव
(पी०सी०एस०, 2003)

29. 'गोशाला' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) द्विगु
(पी०सी०एस०, 2003)

30. 'नवग्रह' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) तत्पुरुष (c) द्वन्द्व (d) कर्मधारय
(पी०सी०एस०, 2003)

31. 'विद्यार्थी' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय (c) बहुव्रीहि (d) द्विगु
(पी०सी०एस०, 2003)

32. 'कन्यादान' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) द्विगु (d) कर्मधारय
(पी०सी०एस०, 2003)

33. 'साग-पात' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) द्विगु
(c) कर्मधारय (d) द्वन्द्व *(पी०सी०एस०, 2003)*

34. 'नीलकमल' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) तत्पुरुष (c) कर्मधारय (d) द्विगु
(बी० एड०, 2004)

35. 'चतुर्भुज' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(बी० एड०, 2004)

36. 'भाई-बहन' में कौन-सा समास है ?
(a) द्वन्द्व (b) बहुव्रीहि (c) द्विगु (d) तत्पुरुष
(बी० एड०, 2004)

37. 'वनवास' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय (c) द्वन्द्व (d) बहुव्रीहि
(बी० एड०, 2004)

38. 'पंचवटी' में कौन-सा समास है ?
(a) नञ् (b) बहुव्रीहि (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय
(बी० एड०, 2005)

39. 'पीताम्बर' में कौन-सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) द्विगु
(बी० एड०, 2005)

40. 'नरोत्तम' में कौन-सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) तत्पुरुष (c) अव्ययीभा (d) द्वन्द्व
(बी० एड०, 2005

41. 'आजन्म' शब्द ..... का उदाहरण है—
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) द्वन्द्व (d) द्विगु *(बी० एड०, 2005)*

42. 'युधिष्ठिर' में कौन-सा समास है ?
(a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि (c) अलुक (d) कर्मधारय
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

43. 'गगनचुम्बी' में कौन सा समास है ?
(a) बहुव्रीहि (b) अव्ययीभाव
(c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

44. 'धक्का मुक्की' में कौन सा समास है ?
(a) कर्मधारय (b) द्विगु
(c) द्वन्द्व (d) तत्पुरुष

45. 'त्रिफला' में कौन सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) द्वन्द्व
(c) द्विगु (d) कर्मधारय

46. 'तन मन धन' में कौन सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) द्विगु (d) द्वन्द्व

47. 'चक्रपाणि' में कौन सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) बहुव्रीहि
(c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष

48. 'पाप-पुण्य' में कौन सा समास है ?
(a) द्विगु (b) द्वन्द्व (c) तत्पुरुष (d) कर्मधारय

49. 'पंचवटी' में कौन-सा समास है ?
(a) द्विगु (b) द्वन्द्व (c) कर्मधारय (d) तत्पुरुष
(हरियाणा बी० एड०, 200

50. 'मृगनयनी' में कौन-सा समास है ?
(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि
(मध्य प्रदेश प्री० बी० एड०, 2007

उत्तरमाला

1. (b)	2. (a)	3. (c)	4. (b)	5. (c)	6. (d)	7. (b)	8. (d)	9. (c)	10. (a)	11. (b)	12. (c)
13. (d)	14. (d)	15. (b)	16. (c)	17. (c)	18. (c)	19. (a)	20. (b)	21. (d)	22. (d)	23. (c)	24. (b)
25. (d)	26. (b)	27. (b)	28. (a)	29. (a)	30. (a)	31. (a)	32. (b)	33. (d)	34. (c)	35. (b)	36. (a)
37. (a)	38. (b)	39. (a)	40. (b)	41. (a)	42. (b)	43. (c)	44. (c)	45. (c)	46. (d)	47. (b)	48. (b)
49. (a)	50. (c)										

★★★